P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बात साहित्य की उपयोगिताः ऐतिहासिक लेखन में

सुशीला शक्तावत
एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
जयनरायन व्यास यूनिवर्सिटी,
जोधपुर, राजस्थान

सारांश

इस आलेख में राजस्थानी बात या कहानी के ऐतिहासिक कथानकों में उपलब्ध सामग्री का इतिहास निर्माण में क्या उपयोगिता हो सकती है, इस पर प्रकाश डाला गया हैं। ये बाते उत्तर मध्यकालीन इतिहास के सामाजिक पृष्ठभूमि व ऐतिहासिक पात्रों के जीवन की उन घटनाओं पर प्रकाश डालती है, जिनका अन्य स्त्रोतों में उल्लेख नही मिलता।

मुख्य शब्द : धीज, कमल पूजा, उलग, एकलंक माथे उदक, सात–बीस, बोल, बजराग, फदिया, गाड़ों।

प्रस्तावना

राजस्थानी बात प्रधानतया कहने की चीज रही है और फिर उसे संवार सजा कर लिख लिया गया है। कई बातों की सजावट विशेष रूप से भी हुई है और उनकी भाषा अधिक आलंकारिक बन गई है।

राजस्थानी बातों का वर्गीकरण उनके विषय के अनुसार किया जा सकता है। प्रस्तुत आलेख में केवल ऐतिहासिक कथानकों से सम्बन्धित बातों को ही आधार बनाकर लिखा गया है।

ऐतिहासिक बात ऐसी बातों का ऐतिहासिक महत्व हैं। ऐसी बातों की बड़ी सख्या हैं, जो ख्यात तुल्य है और वे इतिहास के रूप में ही प्रस्तुत की गई हैं। उनमें कथारस कम हैं। इतिहास में विशिष्ट व्यक्ति को महत्वपूर्ण स्थान मिलने पर भी उनके जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं को ग्रहण नहीं किया जाता। बातों में इस प्रकार की अनेक घटनाएँ देखी जाती हैं, जो ऐतिहासिक पात्र के व्यक्तिगत जीवन से विशेष सम्बन्धित हैं। इसी प्रकार वहाँ ऐसे बहुत अधिक व्यक्तियों के कुल संकेत सहित नाम भी दृष्टव्य हैं, जो विस्तृत इतिहास संकलन में सहायक हो सकते हैं। कोई एक युद्ध हुआ और उसमें किन–किन विशिष्ट व्यक्तियों ने अपनी जीवन–लीला समाप्त की, इसका ब्यौरा बातों में मिल सकता है। इतना ही नहीं, इनमें से कई व्यक्तियों की चर्चा अन्य स्थानों पर भी देखी जा सकती है। इस प्रकार तुलनात्मक अध्ययन द्वारा अनेक अज्ञात व्यक्तियों की जीवन कथा प्रकाशित हो सकती हैं। मोहिला री बात, चन्द्रावतां, री बात, सांखला री बात, राव जोधारी रे बैटा री बात, जगदेव पंवार री बात, वीरम दे सलखावत री बात, अचलदास खीची री बात राजा भीम री बात, बात रायसी महिपालोत री, कैसे उपाधिये री बात, राव चुण्डा री बात, पन्नाधाई री बात, राणा कुंभा री बात, रावल राणा री बात, बापारावल री बात, राणा प्रताप री बात इत्यादि। इतिहास केवल समाज के विशिष्ट व्यक्तियों एवं राजाओं के क्रियाकलाप तक ही सीमित नहीं हैं, उसमें जनजीवन की गतिविधि का अध्ययन भी अपेक्षित हैं। उनमें राजस्थान का उत्तर मध्यकालीन जनजीवन चित्रवत प्रकट है और समाज के प्रायः सभी तत्वों का वहां विस्तार से प्रकाशन हुआ है। इस प्रकार बातों में विशिष्ट व्यक्तियों के साथ ही अपने समय के समाज का इतिहास है। इस सामग्री से तत्कालीन प्रशासन, जातिभेद, धार्मिक–मान्यताएँ, कृषि व्यापार, तथा उत्सव–विनोद आदि सभी विषयों की व्यापक जानकारी प्राप्त हो सकती है।

साहित्य मानव को समझने का उत्तम साधन है और विशेष रूप से कथात्मक सामग्री इस दिशा में अधिक सहायक हैं। इनके द्वारा मानव–मन की विविध स्थितियों का सहज ज्ञान हो जाता हैं। राजस्थानी बातों में मानव चरित्र का आदर्श चित्रण ही नहीं हुआ, वहाँ उसके यथार्थ का प्रकाशन भी हैं। अनेक परिस्थितियों में पड़कर मनुष्य कैसा प्रभाव ग्रहण करता है और किस रूप में वह परिवर्तित होता है, यह तत्व भी बातों में यथातथ्य चित्रित हुआ हैं।

राजस्थानी बातों पर इतिहास तत्व छाया हुआ हैं। महत्वपूर्ण बातें प्रायः ऐतिहासिक है और उनकी बड़ी संख्या है। परन्तु उनमें कोरा इतिवृत्त नहीं हैं, और वहाँ कल्पना का अच्छा चमत्कार प्रकट हुआ है।

राजस्थानी बातों में आलौकिक तत्व व्याप्त हैं। परन्तु सभी बातों में ऐसा नहीं है और वहां तत्कालीन जनजीवन का विषद चित्रण हुआ हैं। अनेक बातों में व्यक्ति एवं समाज की समस्याओं ने भी स्थान पाया है।

मोहिला री बात का प्रारंभ इस प्रकार होता है :–

अथ मोहिला री वार्ता लिख्यते–मोहिल सजानोत, जाति चहवांण, छापर–द्रोणपुर रो घणी हुवौ। तिण री हकीकत। चहवाण ने मोहिल विचे इतरी पीढ़ी।

इसी बात का मध्य भाग का नमूना भी दृष्टव्य हैः–

यां री पातिसाह जी घणी दिलासा की वी। यां मास10/11 चाकरी कीनी। यां सुं मेहरबान हूवा। या री कुमुख नुं घोड़ो हजार 25 दीयो। सारंगखान पठाण विदा कीयो। सारंगखान ने मोहिल नरबद राठौड़ बाघो चलाय ने फतेपुर–झुंझणी री पाखती आया। राणो बैरसल पिण आय मेलो हुवो। राव चीधो पिण आपरा माणस हजार 6 लेने साम्हो गयो। ऐ पिण फतेपुर ने छापर रे कांकड़ आया। दोन फौजा दोनु तरफा आया।[1]

इन उद्धरणो से प्रकट है कि यह इतिवृत के रूप में लिखी गई बात हैं। इसमें कथारस लगभग नहीं है।

कई ऐतिहासिक पात्रों की बातें भी ख्यात तुल्य ही लिखी गई हैं। उदाहरण स्वरूप राव जोधाजी रे बेटा री बात' का नाम लिया जा सकता है। इस बात का प्रारंभ इस प्रकार होता है :–

राव जोधा गया जात पधारिया। उठे आगरा री पाखती नीसरीया। तरे राजा करण राठौड़ कनोज रा घणी नूं राव जोधो मिलिया। तरे राजा करण पात साहजी सुं गुदरायौ ''राव जोधो मारवाड़ रो घणो बड़ो राजा छै। गुजरात रे मुहड़े इण री मुलक छे ने हजरत गुजरात उपर मुहम करण मते छो तो राव जोधा नूं आपरो करो। तरे हजरत पातसाह जी राजा करण नूं कहयो'' राव जोधा नू पगे लगायो। तरे राव जोधे पातसाह सूं मिलियो। पातसाह जी घणी राजी हुवा। मेघाडम्बर छत्र, हाथी घोड़ा, घणो जवाहर, घणी वस्त पातसाह दीन्ही ने कह्यो वले चाहीजे सो मांगी।'' सु तद गया जी दाण निपट घणो सिनान रो लागतो, सु–तिण री रावजी अरजकर ने गया रो दांण छुड़ायो।[2]

इस प्रकार की अनेक बाते इतिवृत के रूप में लिखी गई है भले ही इनमें वर्णित घटनाओं में ठोस ऐतिहासिक तथ्य कम या अधिक हो।

कुतुबदीन साहजादे री बात की हस्तप्रति सं. 1633 की लिखी हुई प्राप्त हैं, परन्तु वैसे राजस्थानी बातों की हस्तप्रतियाँ अठारहवीं सदी के प्रारंभ से लिखी हुई मिलती हैं। उदाहरण द्रष्टव्य है :–

तरे लखे कहयो राव मानू नहीं थाहरो कह्यो। तरे सारणेसर चावण्ड रो कोस पीयो। लखो छागला रो पंणी लायो। राय पीयो। राव नुं लखे जाण दीयो। राव आथा खडीया। तरे लखे दीठो देखां इण रे मन का सूं छै? तरै आदमी दोय पाला ले ने आप ही पालो थकौ अध कोस साथ गयो। सु राव साथिया नु कहे छे म्हैं किसड़ो दाव कर ने लखा नु कहकायो छै? हूँ कदे लीयो गढ़ हिमें दू? म्हे इतरे दुःख लीयो छे। म्हे म्हारों दाव खेलीयो। तरे लखे साद कर ने कहयो, म्हे थांहरो माजनो जांणता ही ज था। न म्हे थाहरे बोले आवां ने म्हे थाहरों दीयो गढ़ल्या। म्हानु परमेष्वर देसी। पिण तुं जाणे महादेव जाणे चावण्ड जाणे। पछे राव सीरोही गयो। पछे पटे दूख, ओता पेट री टूट टूट पड़ी। राव मुवो। पछे लखे थाणो मार ने गढ़ उरो लीयो। आ बात मु. सुंदरदास लिखाई संवत 1703 सावण वद 11 गांव पादरू।[3]

मूल रूप से इस बात में राव लाखा की नीचतापूर्ण कपट चाकरी दिखलाई गई है और यह उस समय चरम बिन्दु पर पहुंची है, जबकि वह षपथपूर्वक वचन देकर भी लखा देवल को दुर्ग देने से अस्वीकार करता हैं।

अनेक राजस्थानी बातें ऐसी है जिनके अन्त में नायक अपने वचन का पूरा निर्वाह करके मृत्यु को प्राप्त हो जाता हैं।

हमीर अपने पिता के सामने प्रकट करता है कि योद्धा गर्दन कटने पर भी शत्रु को मार ही डालता है और अन्त में वह ऐसा ही कर दिखलाता हैं।[4]

पाबुजी राठोड़ ने चारणों से शर्त पर उसकी घोड़ी ली थी कि वे अपना सिर देकर भी उसकी गायों की रक्षा करेंगे। अंत में उन्होंने ऐसा ही कर दिखलाया।

इतरा में पाबूजी ओचक आय ने पड़िया अर घण घेर ने पाछा फिरिया 1 पण एक बाछड़ी आयो नहीं जिण सूं दूजी बार भलें खीचिया रे लारे गया। तठे खीचियां पाबूजी नू एकला देख ने घेरिया। घमासान माचियो। तठै बींद रे बेस माहे ज पाबूजी काम आया। सोढी साथे सती हुई।[5]

जगमाल मालावत री बात का कथानक इस प्रकार हैं– अहमदाबाद के बादषाह महमूद बेगड़ा के उमराव हाथीखान पठान ने सोभट के स्वामी तेजसी तंवर पर आक्रमण किया और तेजसी अपने तीन सौ राजपूतों सहित युद्ध करता हुआ मारा गया। उसका गांव उजाड़ दिया गया और वहाँ कोई न रहा। परन्तु तेजसी और उसके सभी साथी प्रेतयोनि को प्राप्त होकर रात के समय अपने महल में आने लगे। एक रात वहां एक जोगी आकर ठहर गया। उसकी भूतों से भेट हुई। तेजसी ने जोगी को एक संदेष दिया कि वह महेवे के राजकुमार जगमाल को उसकी मनुष्य–योनि की पुत्री से विवाह कर लेने के लिए कहे, जिससे कि वह कन्यादान का फल प्राप्त करके प्रेतयोनि से मुक्त हो सके। तदनुसार जगमाल वहां सूने महल में आ गया और कन्या को ननिहाल से लाकर उनका तेजसी ने यथाविधि विवाह कर दिया। तेजसी की मुक्ति हो गई। उसने अपने साथियों को आदेश दिया कि जब कभी जगमाल उन्हें सहायता के लिए याद करे, वे तत्काल उसके पास पहुंच जावें। जगमाल सपत्नीक महेवे लौट आया और आनन्द से रहने लगा।

कुछ समय व्यतीत हुआ। हाथीखान ने अपने जासूस भेजकर पता लगवाया कि जगमाल किसी कार्यवश महेवे से बाहर गया हुआ है, उसने तीज के त्यौहार पर आक्रमण करके वहां की अनेक बालिकाओं का अपहरण कर लिया। जब जगमाल लोट कर आया तो उसे इस घटना से बड़ा दुःख हुआ। उसका प्रधान भोपजी हुआ था। उसने कुछ घोड़े इस प्रकार से तैयार किए, जो दोड़ने में आश्चर्यजनक थे। जगमाल जी के प्रधान भोपजी हुल

अपने साथ केवल पच्चीस वीरों को लेकर चुपचाप इन घोड़ो पर अहमदाबाद जा पहुंचा और वहां से गनगौर के दिन महमूद बेगड़ा की बेटी गीदोली को जूलूस में से उठा कर ले भागा। उसके घोड़ो को कोई पकड़ न सका और षत्रु देखते ही रह गए। इस घटना के कारण क्रोधित होकर महमूद बेगड़ा ने बड़ी सेना तैयार की और मेहवे तक चढ़ आया। जगमाल ने तेजसी के भूतों को सहायता के लिए स्मरण किया और वे आ पहुंचे। युद्ध हुआ, जिसमें भूतों ने बेगड़ा की समस्त सेना को समाप्त कर डाला और जो भाग छूटा वहीं बच गया। भोपजी गीन्दोली को लेकर महुंवे पहुँचे तो उस समय गणगौर को विसर्जित कर जगमाल जी की सवारी लौट रही थी। भोपजी ने गींदोली जगमाल को सोप दी। उन्होंने सम्मान के साथ गींदोली को आगे किया और आप पीछे हुए। स्त्रियों ने गींदोली को बधाई दी, और वे इनके साथ गीत गाते हुए चली।[6]

लाखा फूलाणी की बात[7] – यह बात भी विशेष ध्यान देने योग्य है। इसकी विशय वस्तु सार रूप में इस प्रकार है– छाहड़ ने कथड़ नाथ की कृपा प्राप्त करके कंथकोट बनवाया और फिर उसकी शक्ति बढ़ती ही गई। पास ही घेहली का स्वामी धरण जिससे छाहड़ का बड़ा प्रेम था। छाहड़ की रानी ने घोड़ों की दौड़ में धरण के केष देखे और वह उस पर आसक्त हो गई। जब छाहड़ यात्रा पर गया तो रानी ने धरण को कंथकोट से बुलवा लिया और इस प्रकार वह कोट का स्वामी बन बैठा। छाहड़ लौटकर आया और वह धरण से लड़कर मर गया। छाहड़ की रानी पतिद्रोह करती है, अतः उसका राज्य प्राप्त करने के बाद धवल उसे किले से बाहर कर देता है।

एक स्वामी भक्त धाय छाहड़ के पुत्र फूल को लेकर कोट से भाग गई और वह जजेबाहण पहुँचकर उसका लालन पालन करने लगी। फूल बड़ा हुआ। एक बार उसने सिंह की शिकार के समय जजै वाहण के स्वामी जैसा के समक्ष बड़ी वीरता प्रदर्शित की। जैसा ने फूल का परिचय प्राप्त करके उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर किया और वह सेना सहित धरण के पास कंथकोट आया। धरण ने फूल को कोट सौंप दिया और अपनी बेटी का उसके साथ विवाह करके बैर समाप्त किया। परन्तु कुछ दिनों बाद फूल ने धरण को मार कर अपने पिता छाहड़ की मृत्यु का बदला लिया।

फूल की शक्ति बढ़ती ही गई। एक बार उसके राज्य में वर्षा नहीं हुई। पंडितों ने प्रकट किया कि व्यापारियों ने धान महंगा बेचने की इच्छा से एक जती के द्वारा मेह को बंधवा दिया गया है और एक विशिष्ट हरिण के सींग से यह जंतर बधा हुआ है। फूल उस हरिण के पीछे गया और उसे मार डाला। इस पर भंयकर वर्षा हुई। फूल किसी तरह वर्षा के कारण अचेत अवस्था में खेरज़ गांव पहुंचा। वहां जमले अहीर ने अपनी बेटी को उसको पत्नी के रूप प्रस्तुत कर उसके प्राण बचाये। इनकी संतान लाखा थी। बड़ा होने पर लाखा को शासन की व्यवस्था का भार मिला, क्योंकि फूल बाहर थाने में रहता था। इस स्थिति में फूल की एक रानी ने उसके सामने प्रेम–प्रस्ताव किया। उसके अस्वीकार करने पर रानी ने उस पर झूठा इल्जाम लगा कर फूल को संदेश दिया। फूल ने बिना विचारे लाखा को देश निकाला दे दिया। कुछ समय बाद फूल की मृत्यु हुई और एक चतुर डुमणी के द्वारा लाखा को बुलवा कर राज्य गद्दी पर बिठाया गया।

लाखा भी सीमा रक्षा के लिए कोट से रवाना हुआ। उसकी सोढ़ी रानी ने इस वियोग को असहनीय बताया तो उसकी सेवा में गायन करने के लिए मनभोलिया नामक डूम छोड़ दिया गया। लाखा चला गया परन्तु सोढ़ी ने डूम के साथ अनुचित सम्बन्ध स्थापित कर लिया। लाखा को थाने में यह खबर मिली। वह चुपचाप एक दिन महल में आया और उसने सब लीला देख ली। उसने सोढ़ी डूम को दान कर दी।

बाद में रानी को पश्चाताप होता है और वह अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेती है।

बातों में होली के अवसर पर ढोल बनाने के लिए शत्रु के राज्य का वृक्ष काटने का भी प्रसंग मिलता हैं।

उपरां होली आई। लाखे जी रा पण भाई बंधा रे धीनणा बाजण लागा। ताहरां बीज सोलंखी ही कहो, ''जो आपां ही धीनण रमसा। ताहरां चाकरा ने कहो रे ढोल कराये।'' तद लाखोजी रो सदाफल आंब हुतो तिको बाढीयो। ते उपर लाखेजी रा चाकरा अर बीज रा चाकरा आपस में लड़ाई हुई। ते उपर बीज चढ जाय और लाखेजी रा आदमी था तीके मारीया। ते उपर लाखेजी नु खबर पोहती, जो आंव पण बाढ़ियो अर चाकर पण मारीया।[8]

वंष गोरव की प्रतिश्ठा प्रकट करने के लिए नायक की आलौकिक उत्पति के अनेक प्रसंग राजस्थानी बातों में द्रष्टव्य हैं।

देवजी बगड़ावतरी बात में कोका शाह की पुत्री लीला तपस्या करती है और हरराम चौहान, सिंह की शिकार के बाद उसका सिर काट कर लीला के सामने लाता है। फलस्वरूप लीला के गर्भ ठहर जाता है और बाधा जन्म लेता हैं। बाधा का सिर सिंह के समान है और धड़ मनुष्य जैसी है।[9]

पछे बैरसी मूंधियाड़ उपर फौज लेने दोड़ियो। साम्हा उण रूप आयो, सु गेचंद मोरियो। पछे ओसिया जात आयो। आप एकंत देहुरो जड़ ने कवल पूजा करणी मांडी तरे देवजी हाथ झालियो कह्यो ''म्हे थारी सेवा पूजा सो राजी हुवा। तो ने माथो बगसियो। तू सोना रो माथो कर चाढ। आप रे हाथ रो संख बेरसी नूं दियो, कह्यो ''ओ संख बजाय ने सांखलो कहाय।[10]

यह अभिप्राय शक्ति, साहस और त्याग के समन्वित रूप का सूचक है।

राजस्थानी बातों में कहीं–कहीं बोल (तानों) का उल्लेख मिलता हैं। बातों में जिस पात्र को ताना दिया जाता है वह उसे पूरा कर दिखाता है और तदन्नतर बात पूरी हो जाती है अगणित राजस्थानी वीरों ने अपनी बोल के लिए प्राणें की बाजी लगाई है। इस अभिप्राय में वचन निर्वाह की दृढ़ता है, जो स्वाभिमान का प्रतीक हैं।

बात सातल जोधावत में सातल जोधावत के ताने के कारण भाई का दरबार छोड़ कर जाता है और फिर आगे अपनी बात पूरी कर दिखलाता हैं।[11] गोगादे

वीरमोतरी बात में गोगादे राठोड़ का भाटीयों से बेर पड़ता है और आगे उसके वंशज निभाते है।[12]

राजस्थानी बातों में विशिष्ट दानी व्यक्तियों के पास इस प्रकार के साधन बतलाये गये है, जिनसे कि कभी उनके धन का अन्त आने का प्रश्न ही नहीं उठता।

सिद्धराज सोलंकी, कान्हडदे सोनगरा, लाखा फुलाणी और बगड़ावतो के पास स्वर्ण पुरूष का होना प्रकट किया गया हैं। बातों के अनुसार इन्होंने प्रचुर धन व्यय किया हैं। इसलिए इनके पास स्वर्ण पुरूष का होना लोक विश्वास का सूचक है।

राजस्थानी बातों में जनशून्य नगरों के सन्दर्भ मिलते हैं। इसकी शून्यता के कई कारण मिलते हैं। कहीं वह किसी दानव के उपद्रव के करण शून्य हो जाता है तो कही प्रेतबाधा के कारण ऐसा होता है। सूने नगर के लिए बजराग नाम लिया जाता है। लोग इस प्रकार के शापित गांव की कोई वस्तु उठाकर घर में लाना अशुभ मानते है।

राजस्थानी बातों को लिखे जाने का एक उद्देश्य इतिहास बोध का प्रकाशन रहा है। उनमें स्थान–स्थान पर इतिवृत्तात्मक विवरण मिलता है। कई जगह युद्ध विशेष में भाग लेने वाले अथवा हताहत व्यक्तियों की नामावलि तक देखी जाती है। इस प्रकार कई स्थानों पर वंश परम्परा एंव अनेक घटनाओं तक की चर्चा की गई है।

इतरे में नागोर और बीकानेर आपस में कजियो हुओ गांव जखाणिया बाबत्। सो नागोर री फोज भागी। बीकानेर री फतह हुई। केसरी सिंह जोधो काम आयो। करण भोपतोत चांपावत काम आयो। गोयंददास, भोपतसिंह, करणोत खेतसी, रायसिंह, अखेराज करमस्योत, लेखो पातावत, जसो बारहठ इतरा सो नामी, बीजो ही घणी लोग काम आयो। साथ बुरी तरह भागीयो।[13]

महेवे खेड़ राव तीड़ो छाड़ावत राज करे, बड़ो आगाढो देसोत। जिकेरे बाये हरण खोड़ा हवे। पाखती राज राईतन, तिका राव तीड़ेरी धाक पड़े। जालोर सोनगरा, साचोर चहवाण तिके राव तीडे कई बार तरवारिया माहे काढ़ीया। बड़ी लड़ाई भीनमाल कीवी। तठे राव तीड़े सोनगरा रो घणो साथ मारियो। सिरदार पण सोनगरा पांच सात ठाकुर काम आया अर राव सामंत सोनगरो अलहो नीसरीयो। तिके लड़ाई पछे सोनगरा हद खाधी अर राव तीड़े री फते हुई। बड़ो नाव सोनगरा नुं साझि रै सख माडि अर हवे दूसरा राईतन उपरे तरवार उठाई। सीरोही देवड़ा राज करे। तिका उपर राव तीडे साथ कर चलाया। देवड़ा नूं पण खबर हुई, आज आपा उपर आयो, हमरके टले नहीं।[14]

बातों में युद्ध के अतिरिक्त कूटनीतिक साधनों का प्रयोग भी यंत्र तत्र देखा जाता है।

कैसे उपाधीये री बात,[15] में सीहड़ सांखला रूण में राज्य करता है। लोग उसके छोटे भाई रायसी के सम्बन्ध में उसके कान भर देते है और वह उसे मार डालने की आज्ञा देकर बहाने से शिकार के लिए निकल जाता हैं। सीहड़ और रायसी की स्त्रियों दोनों सगी बहिनें हैं। अतः रायसी को षड्यंत्र का पता चल जाता है, और वह चुपचाप रूण छोड़कर अजेंसी दहिया के राज्य में जांगलु पहुंच जाता हैं। उसके पक्ष के लोग उसके साथ हैं। अजैसी दहिया दयावश रायसी को रहने के लिए स्थान दे देता हैं। समय निकलता हैं। अजैसी के पुरोहित केसा की अपने यजमान से कोट के पास तालाब करवाने की चेष्टा के कारण नाराजी होती है और वह गुप्त रूप से रायसी से मिलता है। दहिया लोग रायसी के पक्ष की कन्याओं को तंग करते हैं, अतः वह स्वयं उनसे नाराज है। एक षड़यंत्र रचा जाता है, जिसके अनुसार सांखला पक्ष की कन्याओं से विवाह के निमित्त दहिया पक्ष के प्रमुख लोगों को उनके राजा अजैसी सहित वर रूप में बुलवाकर बारूद भरें मंडप में जला दिया जाता हैं। जांगलु का स्वामी रायसी बनता है। कैसा पुरोहित की इच्छा पूरी कर दी जाती है।

इस बात में रायसी सांखला ने भेदनीति के सहारे जांगलू का राज्य प्राप्त किया है–

राव बीज री बात में नायक मूलराज अपने मामा का राज्य छीनने के उद्देश्य से अपनी माता को मार डालता है, जिससे कि भेद न खुल जाए।

मामा को भी 'चूक' द्वारा समाप्त कर राज्य प्राप्त करने में सफल होता है।

ताहरा मूलराज ने बुलाय अर राज पूछीयो। ताहरा मूलराज कहयो हूँ मामा ने मारीस।' ताहरा राज बोहत राजी हुवौ जो मारे छे वो सपुत। ताहरा बाता मसलत करण लागा। ताहरा मूलराज री मा दीठी'' जो आज से बाप बेटा आलोच करै, सु सही ज काई म्हारा पीहरला री बात करै छै। ताहरा मूलराज री मापगरी जेहड़ ऊंची कर ओले आण उभी रही। तद इहा री बाता करता सुणीया, राज कहौ जो बेटा मारे ही मारे तो इसी तरै मारे जु फेर चांवडा रो कोई रहै नही। निकंटको राज हाथ आये, ईयै मूल राज री मा आ बात सुणी तु सत ढीलो पड़ गयौ, तेसु जेहड़ ऊँची चाढी थी, सु उतर गई। सु उतरती बाजी। ताहरां राज लखीयौ रे कुण है? तद मुलराज कह्या– मा छै। ताहरा राज कहो, देखै कासू? थारी मा ने मार, कर पीहरे मायां ने कहैसे। ताहरां मूलराज मा रे सीर माह तरवार री दीनी, सु सीर वाढ़ नारवीयो। पड़तो सीर पगथीयां सु गुडकीयो। ताहरा राज कहयो जो जीतरा ही परसाणीया थारी मा रो सीर उतरीयो छै, ततरी ही पोढीया हण आपांरो राज रहसी।[16]

आणि ने तखत बेसारियो। टीको दे, माथे छत्र लगाई, सतर सहस गुजराति री साहिबी दीन्ही। मुहड़े आगे लूणसाह प्रधान थापीयो। बड़ो राज कीधो। इकतीस बरस करण राज कीयो। सारी धरती साझी। करण रे पाटि सिधराजा जैसिंह हुयो।[17]

इसी धीरप दे ने कहयो–बिराजौ, श्री परमेसर जी सहूं भला करसी। तरा कुंभोजी वैसे नहीं। तरे बले कहयो बावा, गादी आवो, वैसो। तरै कुंभोजी कहयो–नानाजी बेसण ने तो ठौड़ नहीं नै राजि म्हारी बांह संभावो, चीतोड़ वैसाणी तो बैसू नहीं तो झेल्यौ आकाश नांख्यो। मौने राजि बिना किण ही रो आलम्ब नहीं। तरै रावजी बोल्या– जमा खातर राखो, श्री परमेश्वर थांहरो एकलिंगजी सोह भला करसी। या कहि, बाह संभाय ने गादी बेसाणिया, रसोड़े अरोगिया।[18]

बातों में अनेक नरवीरों को नायक के रूप में चित्रित किया गया है। यह ऐतिहासिक गौरवानुभूति का

परिणाम है। साथ ही इसका उद्देश्य समाज को प्रेरणा देना भी।

बातों में प्रायः मुसलमान शासक को पातसाह (बादशाह) की संज्ञा दी गई है। बातों में सर्वाधिक प्रमुखता दिल्ली के बादशाह की प्रकट हुई है।

दिल्ली सहर, पातिसाह अलावदीन पातिसाही करै। अमीपाल साह पातिसाह री चाकरी करे। पांच सौ असवार राखे। पेरोसाह दिल्ली में राज्य करें। पेरोसाह पातिसाह खतग कहाणो। बड़ो पातिसाह हूवो। छपन गढ़ लीया। बड़ा मेवासा भागा। घणी धरती लीधी।[19]

तद अमरसिंह लोक सु बात कर नीसरियो सो पातसाह साहजो कनै आगरे गयो, पावां लागो। पातसाह खरच खावण नूं दीयो। आंबेर जैसिंघ रे परणीयो थो, सो उहां रो मुलाहिजो भारी। सो अमरसिंघ नुं पातसाह आछी तरै रखै। हमेस मुजरै जावे।[20]

राजा जैसिंघ महासिंघोत बड़ो राजा हुयो। बड़ो राह वेधी बुद्धवान हुओ। इसौ ही राजगीरौ जिसोही मन सौ बेदार। सो पातसाह औरंगजेब अवलीयो, बावन वीरां री करामात। सौ जैसिंघ सुं निराठ महरबान। थेट सुं आया थकां जैसिंघ री रूख औरंगजेब सुं रही।[21]

उर्पयुक्त उद्धरणों में दिल्ली के बादशाह की शक्ति और सेवक राजाओं की स्थिति स्पष्ट प्रकट हुई है। यहीं तक ही नहीं अनेक पुरानी घटनाओं पर आधारित बातों में भी दिल्लीपति का बड़प्पन ज्यों का त्यों दिखला दिया गया है।

राणा सांगो चित्रौड़ राज्य करै। बड़ो राणी हुवो। सांगे रे पातिसाह बंदीखाने रहीया, तीयां नु चूडया पहिराई पहिराइ छाडिया।[22]

इसी प्रकार अन्य बहुत से स्वतंत्र राजाओं की चर्चा बातों में मिलती है

राजस्थानी बातों में चित्रित राजतंत्र का मूलाधार सैनिक सेवा हैं। आजीविका अथवा पट्टा प्राप्त करने वाला साधारण सिपाही या सरदार अपने राजा–महाराजा से जुड़ा रहता है। राजा की सेवा में छोटे या बड़े ठाकुर रहते है उन्हें पट्टे दिये जाते थे।

तद मुत्सछिया अरज कीवी– एक बार नागोर पधार मुल्क में लोगां नू पटो देय फेर हजूर पधारज्यो, तद कही थे जावो गांव रो उतारो कर सताब मेलज्यो, तिण माफिक लोगा नूं पटो मेल देस्यां। सो सारो सरतंत कर दियो। आछी जमीरत कीवी। लोग सारा आप आप री जायगा बांधी। लोग सबल हुवो।[23]

कहीं कहीं राज्य में उमरावों की सम्मिलित शक्ति को पर्याप्त महत्व मिला हुआ दृष्टिगोचर होता है। समय पड़ने पर वे षासन की स्थिति में अपने इस महत्व को प्रकाशित भी करते है।

तद राजसिंघ कहीं ''सारा सरदार विराजो छो। पछे ही कोई सिरदार डावी जीमणी बात कहै करे तो हमार कहो। आपा किण ही रो खाधो न छे, दोनूं सिरदार बरोबर छै। पछे किण ही रो पख करो तद आपणे घर में फूट पड़े। तिण सुं हमार कहो। अमरसिंह तो पातसाह रो कीधो हुवे छै। फेर आंबेर परणीयो छै। आपां रो किरीयावर कोई छे नहीं। अर महाराज रै तो आपा पांच माणसा रो बल छै। पछे सारा रे विचार आवे सो हमार कहो। तद सारा बोलीया, आ कांसू बात? आपे मारवाड़ रा पाच ठाकुर छे, सो तो महाराज रा छै।[24]

इस उद्धरण में जोधपुर राज्य का जागीरदार राजसिंह अन्य सरदारों के सामने स्थिति का स्पष्टीकरण करते हुए उनकी सम्मति मांगता है। प्रसंग बड़ा महत्वपूर्ण है। प्रश्न यह है कि राज गद्दी पर बड़े भाई अमरसिंह का बैठना उचित रहेगा या उससे छोटे जसवन्त सिंह का। सरदार जसवन्त सिंह का पक्ष ग्रहण करते है और अन्त में उन्हीं की इच्छापूर्ति होती हैं। यह प्रसंग ठाकुरों के महत्व को प्रकाशन करता है।

शासन में राजा की 'आण' को बड़ा महत्व दिया है। इस आण (आज्ञा) अथवा दुहाई का लोप करने की राज्य में कोई व्यक्ति हिम्मत नहीं करता। साधारण व्यक्ति भी चाहे जिसको राजा की आण के नाम पर किसी भी काम से रोक सकता हैं। आण राजकीय प्रभाव की सूचक है।

तहरा रावजी कहियो ''माली रो आणा दीनी। सु तो आंण हजूर री ही भागी। आपणी सींव कोस दोय छै, सुआण कोण मानसी। थे तो आण न मानो। ठकुराई राखणे करो तो आगे भाटीया हिसे जा। अठे रहिसो तो बीजा भाई थांहरा पांच माणस छै, तिम थेई बेठा रहो। नहीं तो भाटीये जाय गढ़ मोडौ।[25]

राजा अपने सगे भाई तक को आण न मानने के कारण राज्य से बाहर निकाल देता है।

भविष्य की सूचक कई अन्य घटनायें भी लोकविश्वास में समाई हुई है। उनका फल भी ध्यान देने योग्य है। राव चूण्डा री बात में बताया गया हैं कि बालक चूण्डा के सिर पर नाग ने फन फेला रखा हैं, जो उसके छत्रपति होने का सूचक है। नाग स्वयं शक्ति का रूप है। ऐसी घटना लोककथाओं में अनेक व्यक्तियों के सम्बन्ध में देखी जाती है। बात राव वीकेजी री में प्रकट होता है कि जहां नाग कुण्डली मारकर बैठता है वह स्थान दुर्ग बनवाने के लिये उत्तम समझा जाता है। ऐसे स्थान पर ही बीकानेर बसाया गया है।[26]

उर्पयुक्त बातों में वीर के व्यक्तित्व का गजब चित्रण हुआ है।

वीरौ आगै आवतौ हतै। तिण उपर सातल टूट पड़ियो। तरगस महा तीर काढ़ नै वीरे री छाती माही दीनो। सिलह पो छाती माह पेले पार जाय नीसरयो। वीरो मारियो नै फोज भागी।[27]

इतरो सुणीयो। ताहरा मीढ़ा खान घोडे नुं ताजणो बाह्यो अर घोड़ो चालीयो। नाराइणदास पिण घोड़े नुं ताजणो बाहयो अर घोड़ो चालीयो। पिण बीच घटै नहीं। बैवे ऐराकी, बीच मिटे नहीं। नाराइणदास जाणे जु बरछी सूं मारू। कोस कोस गयो। ताहरा नाराइणदास राखि घोड़ा उभो लगामी री डोर तरगस री कूट सुं बाधि ने उलालसी बरछी बाही, सु मोरा रो तवो फाड़ि गात फोड़ि अर आगा बरछी घोड़ा रो कांधो फोड़ि अर पगा बीच जाइ नीसरी।[28]

उर्पयुक्त उद्धरणों में दो वीरो के पारम्परिक युद्ध से सम्बन्धित है। कई बातों में दो योद्धाओं के पट्टेबाजी का वर्णन मिलता है।

तठे रणमल जी नेम घातीयो– रणकलंक माथे उदक, ईदा ने काढ़या बिना गयौ धान न खावूं। इम कहि सर्व साथ एकठौ कीयौ ही नहीं, आप रा ही ज घोड़ा पचास ..... चलाया।[29]

अठे रावत जी कागद वाच ने सीसलां रे सात–बीस गांव माहै तेड़ौ मेलीयो।[30]

बातों में शिकार के वर्णन अनेक स्थानों पर मिलता है। कई वर्णन सिंह वराह आदि भयंकर पशुओं से सम्बन्धित है तो दूसरों में हरिण खरगोश जैसे पशुओं की चर्चा भी है।

अनेक बाते ऐसी है जिनका मूलाधार ही कोई विशिष्ट घोड़ा या घोड़ी है, जैसे हाहुल हमीर री बात, मूलवै सांगावत री बात, पांबूजी री बात, सूरे खीवे री बात, रूद्र–महाले री बात आदि। बातों में घोड़े का मूल्य बहुत ऊँचा प्रकट किया गया है और तद्नुसार ही उनके कई नाम प्रचलित हुए जैसे कोड़ीधज लखीणी (घोड़ी) पावरौ, नीलावर पीवलो, पाणी पंथ, जलहरे, कालमी इत्यादि।

राजस्थानी बातों में अनेक पुराने सिक्कों का उल्लेख मिलता है।[31]

1. पेई खोल ने पांच असरफिया घाली, ऊपर पांच रूपया मेलिया।
2. मालण पांच मोहरां ले ने आपरी साल में उतारो दियो।
3. पीरोजी लाख कोठार रावला थी तेजसी रा हुजदारा नुं सुहालीसा गिण दिया।
4. तरे हुजदारे चाकरे कहयो, फदिया राज घणा ही मेलिया।
5. मन में आ बात राखी, जै मारी लाख दुगाणी राव रा हुजदार कन्हें लेणी छै।
6. सारी बसंता री लेखो करि ने सुजाण नायक ने नांणो दिरायो।

ताहरा सीहड़ री बायर रायसी री बायर नु तेड़ि नै बात कही जु बहिन जाइ ने रायसीजी नूं कहि, छोड़ो। राणो थासूं भूंडो छैं। जे धरती छाड़ि जास्यो तो उबरिस्थो नहीत मारी जिस्यो। ताहरां ईये रायसी नुं कहयो, छाड़ो मोनूं बहिन कह्यो छे, जे सुवारै अठे रहदा तो मारीजिसो। गाड़ा जोतरावो हालो। सभी सांझ रो गाड़े भार घालि व हिलां सेजवाला जोतरि ने सोपे पड़या बहीर हूवौ।[32]

बातों में ''गाड़ो (बड़ी गाड़ियों) में रहने की चर्चा भी अनेकशः देखी जाती है–

ताहरां भरमल रो गाड़े वास है, ओथ जाय ने नीसरियो। गाड़े री ढाल हेठे भरमल सूता छै।[33]

हिन्दू मुस्लिम सौहार्द्ध– राजस्थानी बातों में हिन्दू मुसलमानों का राजनीतिक संधर्व अवश्य प्रकट हुआ हैं। परन्तु वहां साम्प्रदायिक विरोध दिखलाई नहीं देता। अनेक बातों में हिन्दू व मुसलमानों में पूर्ण सौहार्द प्रकाशित हैं। वीरमदे सलखावत री बात में राठौड़ वीरमदे की पत्नी देपालदे जोइया (मुसलमान) की प्राण रक्षा करती है और बदले में वह उसके साथ उपकार करता है। एक अन्य बात में एक नवाब अपने वचन का निर्वाह करते हुए महाराज पद्मसिंह की मृत्यु के बाद फकीरी ले लेता है। इनमें ये पारस्परिक मित्रता का प्रकाशन होता है। इतना ही नहीं हिन्दू तथा मुसलमानों के पारस्परिक विवाह सम्बन्ध के भी बातों में अनेक उदाहरण है। विवाह संस्कार हिन्दू विधि से संपन्न किया जाता है। कहीं–कहीं तो मुसलमान पात्रों को देवदर्शन पूजन तक करते हुए भी देखा जाता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार समग्र रूप से विचार करने पर राजस्थानी बातों का उद्देश्य बहुविध प्रकट होता है। अतः यह साहित्य सामग्री सभी के लिए उपादेय है। निश्चय ही ऐसी बातों में प्रकट की गई समग्र घटनाओं को ऐतिहासिक रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता। फिर भी वहाँ इतिहास की सामग्री का अवस्थित होना स्वीकार किया जा सकता है। इस साम्रगी की अन्य साधनों से छानबीन किए जाने की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया से निश्चय ही अनेक तथ्य उपलब्ध हो सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *मोहिला री बात हस्तप्रति अभय जैन ग्रंथालय बीकानेर, गुटका संख्या 80, बात सं. 21*
2. *रावा जोधाजी रे बेटा री बात, हस्तप्रति अनुप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर, गुटका संख्या 208, बात संख्या 25*
3. *राव लाखे री बात, हस्तप्रति अनुप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर, गुटका संख्या 208 बात संख्या 12*
4. *बात अरजन हमीर भीमोत री, हस्तप्रति अनुप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर गुटका संख्या 208, बात संख्या 8*
5. *पाबूजी री बात– हस्तप्रति अभयजैन ग्रंथालय बीकानेर, गुटका संख्या 80, बात संख्या 16*
6. *जगमाल मालावत री बात– हस्तप्रति अभयजैन ग्रंथ बीकानेर गुटका संख्या 80 बात संख्या 11*
   तब से (लगभग 600 वर्षो से महुवे से पकड़ कर ले जाई गई 140 कन्याओं व गींदोली की स्मृति में गणगौर विर्सजन के दिन गींदोली तो लगभग सारे राजस्थान में गाई जाती हैं।
   आगे आगे गींदोलड़ी, पीछे ए जगमाल कंवर। धीरा रो ए जगमाल कंवर, म्हारो छेल रूस्यो जाय।
7. *लाखा फुलाणी री बात हस्तप्रति अभय जैन ग्रंथालय बीकानेर गुटका संख्या 98 बात संख्या 19*
8. *बात राज बीज री हस्तप्रति अभयजैन ग्रंथालय बीकानेर गुटका संख्या 80, बात संख्या 10*
9. *देवजी बगड़ावत री बात हस्तप्रति अभयजैन ग्रंथालय, बीकानेर गुटका संख्या 82, बात संख्या 7*
10. *बात पंवारा री नैणसी की ख्यात भाग 1 प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, पृष्ठ सं. 338 से 339*
    कमल–पूजा राजस्थानी बातों का विषिश्ट अभिप्राय है। इसमें नायक प्रायः देवी को अपने सिर कमल के समान चढ़ाने को तैयार होता है और देवी प्रकट होकर उसे रोक देती है।
11. *बात सातल जोधावत री हस्तप्रति अनुप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर, गुटका संख्या 208, बात संख्या 18*
12. *गोगादे वीरमोत री बात, हस्तप्रति अभयजैन ग्रंथालय बीकानेर गुटका संख्या 82, बात संख्या 12*

13. *राजस्थानी बात संग्रह संपादक नारायण सिंह भाटी, राजस्थानी शोध संस्थानी चौपासनी पृ. 104*
14. *बात राव तीड़े छाड़ावत री हस्तप्रति अभय जैन ग्रंथालय बीकानेर गुटका संख्या 82 बात संख्या 15*
15. *केसे उपाधिये री बात, हस्तप्रति अभय जैन ग्रंथालय बीकानेर गुटका संख्या 82, पृ. सं. 15*
16. *बात राज बीज री, हस्तप्रति अभय जैन ग्रंथालय बीकानेर गुटका संख्या 80, बात संख्या 10*
17. *राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रंथों का सर्वेक्षण संपादक नारायण सिंह भाटी, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिश्ठान जोधपुर, पृ. 206*
18. *ऐतिहासिक बातें ग्रथांक 1234 राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी पृष्ठ 28*
19. *पेरोसाह पातसाह री बात, हस्तप्रति अनुप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर, गुटका संख्या 204, बात संख्या 10*
20. *राजसिंघ खीवावत री बात वरदा भाग–3, अंक 1, वर्श 1960, राजस्थान साहित्य समिति बिसाऊ, पृ. 40*
21. *आंबेर रा धणी री बात, हस्तप्रति अभयजैन ग्रंथालय बीकानेर गुटका संख्या 82, बात सं. 16*
22. *बात राव सूरजमल री हस्तप्रति अभयजैन ग्रंथालय बीकानेर, गुटका संख्या 81, बात संख्या 6*
23. *बात मूलवै सांगावत री, हस्तप्रति अभय जैन ग्रंथालय बीकानेर गुटका संख्या 81 बात संख्या 5*
24. *बात राज सिंघ खीवावत री वरदा भाग–3, अंक 1, वर्श 1960, राजस्थान साहित्य समिति बिसाऊ, पृ. 40*
25. *बात सातल जोधावत री अनुप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर गुटका संख्या 208 बात संख्या 18*
26. *बात राव बीकेजी री बीकानेर मंडीयो ते समैरी हस्तप्रति अभयजैन ग्रंथालय बीकानेर, गुटका संख्या 81, बात संख्या 9*
27. *बात सातल जोधावत री अनुप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर गुटका संख्या 208 बात संख्या 18*
28. *बात नारायणदास मीढ़ा खान की, हस्तप्रति अनुप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर गुटका संख्या 204, बात सं. 5 राजस्थानी बात संग्रह भाग– नारायण सिंह भाटी, राजस्थानी शोध संस्थान चोपासनी, पृ. 89*
29. *बात राव रणमल री हस्तप्रति अभय जैन ग्रंथालय बीकानेर, गुटका संख्या 204 बात संख्या 21, एकलंक माथे उदक का अर्थ है षिव के षीष पर जल। किसी कार्य अथवा वस्तु को त्याग करने के प्रसंग में इसका प्रयोग होता है। यह षपथ वचन हैं। षिव को भेंट किया हुआ निर्मात्य ग्रहण नहीं किया जाता है। यह लोक परम्परा है।*
30. *ऐतिहासिक बातें – ग्रथांक 1234, राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी, पृ. 45*
    सात–बीस का प्रयोग 140 ;7ग20द्ध की संख्या के लिए हुआ है। राजस्थान में 20 के हिसाब से गिनती करने की प्रथा अब भी गांवों में प्रचलित है।
31. *ऐतिहासिक बातें – ग्रथांक 1234, राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी पृ. 80,*
    नाणों षब्द रकम के लिए प्रयोग हुआ है।
32. *बात कैसे उपाधिये री, हस्तप्रति अभयजैन ग्रंथालय बीकानेर, गुटका संख्या 82, बात संख्या 15*
    प्रवजन हेतु उलग या ओलग या छोड़े षब्द प्रयोग में लिया गया है। इस क्रिया में एक आश्रय स्थान को छोड़कर अन्यत्र जाकर निवास किया जाता है। प्रवजन का एक कारण राजकीय विरोध में की गई छोड़ भी है।
33. *बात कंवलसी साखले ने भरमर री, हस्तप्रति अभयजैन ग्रंथालय बीकानेर, गुटका संख्या 81, बात संख्या 12*